MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Arts Science & Commerce College
Naldurg

विद्या वार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-30, Vol-03 April to June 2019

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with Ca

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Arts Science & Commerce College Naldurg

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-03

Date of Publication
02 April 2019

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with Ca

Arts Science & Commerce College Naldurg

26) भारतीय कृषी आणि वित्तपुरवठा
परमेश्वर सुभाषराव भुस्से ||126

27) डलहौसीच्या खालसा धोरणाने ब्रिटिशांनी भारतात केलेला प्रादेशिक विस्तार एक चिकित्सक अध्ययन
प्रा. डॉ. संतोष शंकरराव इंगोले, वाशीम ||128

28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर निर्मित राष्ट्रवांभणीचा दस्तऐवज: भारतीय संविधान
सुकेशिनी संजय जोगदंड, जि. बीड ||131

29) भ्रष्टाचार एक गंभीर सामाजिक समस्या
प्रा.महेश पा. कामडी, जिल्हा चंद्रपूर ||138

30) आदिवासी व गैरआदिवासी विद्यार्थ्यांच्या सामाजिक समायोजनाचे चिकित्सक अध्ययन
डॉ. आर. एल. निकोसे & विनोद वा. गेडाम, नागपूर; महाराष्ट्र ||145

31) दलित कवितेत 'लोकनाथ यशवंत यांच्या कवितांचे निराळेपण'
शितल वासुदेव निमगडे, चंद्रपूर ||149

32) परभणी जिल्यातील स्वयंसहाय्यता बचत गटांच्या निवडक लाभार्थी कुटूंबाचा ...
पवार सुरेखा विठ्ठलराव & डॉ. वसंत के. भोसले, परभणी ||153

33) जयप्रकाशनारायण—समाजवादी विचारवंत
डॉ. राम फुन्ने, पाथरी ||156

34) हिंदी महिला साहित्यकारों से मिली नारी जीवन को प्रेरणा
सुरेखा नानाजी भामरे, नाशिक, महाराष्ट्र ||160

35) राजेंद्र यादव जी के कहानियों में संवेदनशील आधुनिक नारी जीवन
प्रा. देशमुख विरेश उत्तमराव, जिला- नांदेड ||164

36) जनसंख्या वितरण एवं घनत्व
Shikha Gupta, Dist - Jalaun, U.P. ||165

37) हिंदी की विश्व पताका फहराता यात्रावर्णनकार महेश दिवाकर
डॉ. हाशमबेग मिर्झा & सुदाम दौलत पाटील, जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) ||170

38) बुन्देलखण्ड के साहित्यकारों का योगदान
डॉ. अमित शुक्ल, रीवा, म. प्र ||174

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with Ca

और उर्वरता, भूमिगत जलस्तर एवं इसकी सिंचाई हेतु उपलब्धता इत्यादि जनसंख्या वितरण प्रारूप को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण घटक है। अभी तक देश में नगरीय औद्योगिक सभ्यता का जनसंख्या वितरण पर ज्यादा प्रभाव नहीं आता, इसलिये हाल में जनसंख्या वितरण में जो नवीन प्रवृत्तियां देखने को मिलती है। वे भी जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले इन घटकों के महत्व को ही पुनः स्थापित करती है। इसी कारण से नवीन कृषि प्रसार क्षेत्र गहन कृषि के फलस्वरूप पोषण क्षमता वृद्धि क्षेत्र तथा बागाती खेती क्षेत्र में भारी मात्रा में दूसरे भागों से प्रवासियों का आगमन बढ़ा है।

□□□

37

Arts Science & Commerce College Naldurg

हिंदी की विश्व पताका फहराता यात्रावर्णनकार महेश दिवाकर

डॉ. हाशमबेग मिर्झा
शोध निर्देशक,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नलदुर्ग,
जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

सुदाम दौलत पाटील
शोध छात्र,
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय नलदुर्ग,
जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

****

सारांश :

हिंदी की साहित्तेतर गद्य विधा का विकास आधुनिक काल में हो रहा है। जिसमें यात्रा वृत का विकास अभी भी पूर्ण रूपेण नहीं हुआ है। प्रसिध्द घुमक्कड़ राहूल सांकत्यायन के बाद अब साहित्यकार इस ओर आग्रसर हुए है। डॉ. महेश दिवाकर का लेखन इस दृष्टि से महत्वपुर्ण है। उनके अभी तक नौवं प्रवास वर्णन प्रकाशित हो चूके हैं। जिसमें देश विदेश में हिंदी भाषा एवं साहित्य की विकास को दर्शाया गया है। साथ ही विश्व के अनेकों देशों में हिंदी सम्मेलनों का आयोजन कर वहां की सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक परिस्थिति को भी दर्शाया है। प्रवास वर्णनों को रोचकता के साथ लिखते हुए उन देशों के इतिहास एवं भूगोल को भी हमारे सामने रखा हैं। जिससे की पाठक दिवाकर जी पाठक वर्ग दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है।

बीज शब्द : हिंदी, विश्व पताका, यात्रावर्णन, महेशचंद्र दिवाकर

प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में बहुत कम यात्रा वृतांतकार

Scanned with Ca

Arts Science & Commerce College Naldurg

हुए हैं। आरंभ में राहुल सांकृत्यायन जी के यात्रा वृतांत प्रसिद्ध रहे हैं, उनके उपरांत धर्मवीर भारती ने भी अपने यात्रा वर्णनों को साहित्यिक दृष्टि से लिखकर इस विधा में एक रोचकता का निर्माण करने का कार्य किया है। आज के समय में हिंदी साहित्य में डॉ महेश चंद्र दिवाकर जी ने विश्व के कई देशों में जाकर हिंदी का प्रचार प्रसार किया। इस प्रचार—प्रसार को उन्होंने अपने यात्रा वृतांत में रोचकता के साथ एवं प्राकृतिक सौंदर्य की विशेषताओं के साथ स्पष्ट किया है।

अब तक उनके लगभग १२ यात्रा वृतांत प्रकाशित हो चुके हैं। यात्रा वृतांत के संबंध में डॉक्टर माजदा असद ने लिखा है, यात्रा वृतांत के दौरान मनुष्य द्वारा की गई यात्रा के वर्णन को यात्रा के दौरान हुए खट्टे मीठे अनुभव को साहित्यिक रंग में प्रस्तुत किया जाता है। बीते हुए यथार्थ का मासिक वर्णन होता है। यात्रा के बीच मिले या संपर्क में आए हुए व्यक्तियों और घटनाओं को स्वाभाविक ढंग से कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। एक स्थान से दूसरी जगह जाना या भ्रमण करना यात्रा की संज्ञा पाता है। पहले यातायात के साधन कम थे, तो यात्राएं भी कम होती थी। आज परिवेश बदल गया है, सांस्कृतिक आदान—प्रदान, राजनीतिक कामकाज, जीविका उपार्जन, शिक्षा प्राप्ति तथा प्रिय जनों से मिलने के लिए भी यात्राएं होती है। आधुनिक काल में यात्राओं के वर्णन की साहित्यिक अभिव्यक्ति यात्रा वर्णन कहलाती है। यात्रा वृतांत में जिस जगह की यात्रा की जाती है उस का महत्वपूर्ण स्थान होता है। आत्मीयता, कल्पनाशीलता और रोचकता इस विधा के विधायक तत्व है।''१

साहित्यत्तर गद्य विधाओं में यात्रा वर्णन को नीरज, नीरस विधा के रूप में पहचान है किंतु कभी—कभी यात्रा वर्णनकार अपनी यात्रा को इतने रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है कि पाठक उसकी रोचकता में स्वयं को भूल जाता है। इतना ही नहीं वह लेखक की आंखों से उस जगह का आनंद लेता है। बाहय जगत की प्रतिक्रिया से उसके बारे में जो भावनाएं जगती है वह उनकी अपनी संपूर्ण चेतना के साथ व्यक्त कर देता है। जिससे शुष्क विवरण भी इतने मधुर और भाव विभोर हो जाते हैं कि उनका पाठक तन्मय होकर लेखक के साथ तादात में स्थापित कर लेता है। लेखक की अनुभूतियों में इतना डूब जाता है कि उसे अपना आत्मबोध नहीं रहता। मध्ययुगीन यात्रा वर्णनों में हम अलबेरूनी के हिंद को हम इसी रोचकता से पढ़ते हैं। आधुनिक काल में धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा के यात्रा वृतान्तों के साथ कई यात्रा वर्णनकारों ने अपने सुखद एवं दुखद यात्राओं का चित्रण करके इस विधा को पुश्ठ किया है। यात्रा वृतांत के माध्यम से लेखक उक्त जगह के रीती रिवाज, रहन सहन, आचार विचार, व्यवहार, मनोरंजन के साधन, प्रकृति सौंदर्य, जलवायु, ऐतिहासिक वास्तु, शैक्षिक वस्तुएं, राष्ट्रीय व्यक्ति आदि का विस्तार से वर्णन करता है। साथ में प्रवास वर्णन करते समय जो महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई हैं। उनका भी उल्लेख करता है, इस समय लेखक सहज, सरल एवं रोचक भाषा का प्रयोग करता है जिससे कि पाठक निराश ना हो जाए।

हिंदी में सबसे अधिक प्रसिद्ध यात्रा वर्णनकार राहुल सांकृत्यायन हैं, वे कहते हैं, सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां। गर जिंदगी फिर मिले तो नौजवानी फिर कहां। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य ने अपने जीवन में यात्राएं करनी चाहिए। जिससे कि उसे नये—नये अनुभव प्राप्त हो। नया सीखने को मिले, नयी जगह पर घूमने से एक नई ऊर्जा, नव संचार मन में जागृत होता है। जिससे वह अपने जीवन की कठिनाइयों को सहज रूप में पार करता हुआ, फिर से जिंदगी की खुशियां प्राप्त कर सकता है। वैसे देखा जाए तो यात्रा वृतांत यह विधा वैयक्तिक जीवन के अनुभवों को व्यक्त करने की विधा है। इस कारण इसमें बहुत सारी वैयक्तिकता आ जाती है। जैसे कि लेखक कि अपनी रुचि एवं गति के साथ वह उक्त यात्रा को देखता है और उसे ही अपनी कलम से व्यक्त करता है। जबकि होना यह चाहिए कि वह आम आदमी की आंखों से देख कर अपने अनुभवों को व्यक्त करें। जिससे समाज के अन्य लोग उस यात्रा वृतांत से अनुभव प्राप्त कर सकें, एवं अपने जीवन की यात्राओं में आने वाली कठिनाइयों को दूर कर सकें।

महेशचंद्र दिवाकर ने अपना प्रथम यात्रा वर्णन सौंदर्य के देश में नाम से लिखा है। जिसमें वे

Scanned with Ca

Science & Commerce College Naldurg 0172

प्रसिध्द अप्रवासी भारतीय साहित्यकार डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल के साथ उनके देश नार्वे के सांस्कृतिक दौरे पर थे। नार्वे का चित्रण उन्होंने बहुत ही सौंदर्य परक दृष्टि से किया है। इस प्रवास वर्णन में आयी कठिनाइयों के साथ नार्वे के सौंदर्य का वर्णन करते हुए वे कहते हैं, हमने देखा, स्वच्छ निर्मल चांदनी दूर–दूर तक बिछी हुई है। धरती से आकाश तक दूधिया चांदनी अपना कौतुक फैला रही है। समग्र आसमान साफ है। बादल रहित है। आकाश में तारे चमक रहे हैं। पृथ्वी के बहुत समीप चंद्रमा लग रहा है। सारा मौसम शांत ठंड नहीं के बराबर दूधिया ठंड। नार्वे की धरती, पर्वतीय श्रंखलायें, वृक्षों, भवनों, घाटियों में दूर–दूर तक चांदनी बिखरी हुई है, मानो प्रकृति वधू हमें देखकर खिलखिला कर हंस रही हो। बड़ा ही निराला दृश्य।२ इसके साथ ही नार्वे की राजधानी ओस्लो के अधिकारियों का व्यवहार, हवाई अड्डे पर आया अनुभव आदि का भी विस्तार से वर्णन किया हुआ है।

महेश दिवाकर का दूसरा यात्रा वृतांत हैं **कर्मवीरों के देश में**। जिसमें त्रिनिडाड एवं टूबेगो देश का वर्णन है, जब विश्व हिंदी सम्मेलन यहां पर आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में देश विदेश के बहुत से हिंदी सेवी आये थे। जिसका दिवाकर जी पर बहुत ही प्रभाव पड़ा था। इस ग्रंथ के भूमिका में वे लिखते हैं, घुमक्कड़ी एक अनूठे आनंद की अनुभूति कराने वाली जन्मजात मनोवृति है। इसकी सुखद अनुभूति वर्णनातीत है। घुमक्कड़ी गूंगे के गुड़ के समान है। जिसमें प्रकृति और भौतिकता से सीधा साक्षात्कार होता है। जो नैनों से सीधा निहारा जाता है। उसके सहज सुख की अनुभूति की अभिव्यक्ति केवल रचनाकार ही आंशिक रूप में कर सकता है। भौतिक चित्रों को तो श्वेत पृष्ठों पर हू–ब–हू उतार लिया जाता है। लेकिन प्राकृतिक दृश्यों को किंचिद् रूपेण उसके बाहय आवरण में ही कोई रचनाकार चित्रित कर लेता है। वे आगे कहते हैं कर्मवीरों के देश में नामक इस काव्यकृति में मेरी घुमक्कड़ी का किंचितद् रूपेण वर्णन है। जो की ट्रिनीडाड एवं टूबैगो(वेस्टइंडीज) के विविध स्थलों को आलोकित करता है। जिसका आरंभ ७ अगस्त २०११ से हुआ और १७ अगस्त २०११ को भारत लौटने के साथ संपन्न हुआ। यह मेरी व्दितीय सांस्कृतिक यात्रा है।३

दिवाकर जी की तीसरी सांस्कृतिक यात्रा ताशकंद, समरकंद इन शहरों के साथ उज्बेकिस्तान देश की है। जो एक समय में रशिया का हिस्सा था। बाद में उसे आजादी प्राप्त हुई। इस सांस्कृतिक यात्रा को उन्होंने **श्रमजीवी के देश में** यह नाम दिया है। यह सांस्कृतिक यात्रा लगभग १० दिनों की थी। जिसमें देश विदेश के ६० से अधिक हिंदी सेवी आये थे। जिसमें उज्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद शहर में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के साथ हिंदी का एक वैश्विक काव्य सम्मेलन भी हुआ था। विश्व धरोहर के रूप में प्रसिद्ध सूफी संतों का शहर समरकंद का प्रवास, तैमूर संग्रहालय आदि को लेखक ने इसमें विस्तार से वर्णन किया है।

दशानन के देश में उनका चौथा प्रवास वर्णन है। जो२०१४ में लिखा हुआ है। इसमें भारत के पड़ोसी मुल्क श्रीलंका की यात्रा का वर्णन है। जिसे उन्होंने लगभग ६४ पृष्ठों के अंतर्गत लिखा है। दिवाकर जी स्वयं लिखते हैं, श्रीलंका जाने का न्योता मुझे, महाराष्ट्र नागपुर के श्री सूर्यकांत सिंह ठाकुर ने दिया। जो ताशकंद प्रवास में भी मेरे साथी थे। बीच–बीच में उनसे मेरी दूरभाष पर बात होती थी। उनकी सहजता, सरलता और आत्मीयता ने दशानन के देश में घूमने और तत्पश्चात दशानन के देश में किए भ्रमण को मूर्त रूप देने को बाध्य किया। अत: मेरे अनुजवत्प्रिय बंधू सूर्यकांत सिंह ठाकुर के प्रति स्नेह भाव ही इस यात्रा कृति दशानन के देश में की पंक्ति–पंक्ति में समाया है।४

दिवाकर जीका पांचवा यात्रा वर्णन है **संभावना के देश में** जिसमें उन्होंने दुबई और अबू धाबी का वर्णन किया हुआ है। इस यात्रा का वर्णन उन्होंने बहुत लंबी भूमिका के साथ आरंभ किया था। इस यात्रा के संबंध में वे बहुत उत्साही क्योंकि हर भारतीय व्यक्ति जानना चाहता है कि मुस्लिम देश कैसे होते हैं।वहां का रहन सहन एवं वहां की संस्कृति आदि आदि। यहां की यात्रा के संबंध में कहते हैं, दुबई में हर प्रकार का अनुशासन कठोरता से पालन किया जाता है। यहां पर

Scanned with Ca

Science & Commerce College Naldurg

भ्रष्टाचार का नाम नहीं है, पर्यावरण के प्रति लोग अत्यंत सचेत है, विद्युत की पर्याप्त सुविधाएं और पावर कट नहीं के बराबर है। सारे कार्य विद्युत चलित है, सौर ऊर्जा का उपयोग जैसा यहां होता है, वैसा विश्व में कहीं नहीं है। ध्वनि प्रदूषण नहीं के बराबर है, सार्वजनिक अथवा खुले स्थानों में थूकना, गंदा करना, कूड़ा करकट डालना दंडनीय अपराध है। चारों ओर कैमरे लगे हैं। सुरक्षा व्यवस्था चाक–चौबंद है। ईमानदारी और अनुशासन है। यही कारण है कि यह देष मात्र ४३ वर्षो की आजादी में प्रगति के सोपान को छू रहा है। विज्ञान द्वारा प्रदत्त आधुनिक तकनीकी संसाधनों का यहां अत्यंत उपयोग किया जाता है। मुस्लिम देश होते हुए भी आतंक, असुरक्षा और अनुशासन हीनता का यहां दूर–दूर तक नाम नहीं है। कानून अत्यंत कठोर है और निष्पक्ष एवं कठोरता से इनका अनुपालन किया जाता है। यहां की सड़कें परिवहन व्यवस्था और भवन निर्माण कला प्रेरक एवं दर्शनीय है।५

नेपाल देश की सांस्कृतिक यात्रा का विवरण को दिवाकर जी ने **सदाचार के देश में** नाम से प्रकाशित किया है। जिसमें नेपाल एवं हिमलय की वर्फिली चट्टानों का वर्णन मिलता है। यह यात्रा उन्होंने ८ जून से ११ जून २०१३ के बीच संपन्न की थी। इस यात्रा में भारत और भारत के बाहर से लगभग १०३ हिंदी प्रेमी आए थे। वहां पर एक भव्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसमें दिवाकर जी ने संयोजक का कार्य किया था। वहां के दर्शनीय स्थान एवं मनोहरी पर्वत मालाओं को देखकर उनका कवि मन खामोश नहीं रह सका।वे कह उठे–

वाह ! वह ! क्या देश है, सृष्टि बीच नेपाल।
हिमगिरि के आसन मनो, बैठा ज्यों भूपाल।।
ऊंची पर्वत चोटियां, हरा–भरा हर छोर।
धरती से आकाश तक, भव्य छटा चहुँ ओर।।६

अनुशासन के देश में यह दिवाकर जी का सातवा यात्रा वृतान्त है। जो सिंगापुर की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक यात्रा का वर्णन है। २ फरवरी २०१४ से लेकर ६ फरवरी २०१४ के बीच अंतरराष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन के साथ यह यात्रा आरंभ हुई। जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, त्रिनिडाड, मॉरीशस, नेपाल, सिंगापुर आदि देशों के लगभग ७० हिंदी सेवी सम्मिलित हुए थे। इसमें तीन सत्रों में लगभग ५० शोध पत्र पढ़े गए थे। जिसे हिंदी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ नामक ग्रंथ में प्रकाशित किया गया है। वहां की ऊंची–ऊंची इमारतें और अनुशासन का लेखक ने विस्तार से वर्णन किया हुआ है। वहां के सभी दर्शनीय स्थलों को लेखक ने अपनी कलम व्दारा ऐसे प्रस्तुत किया कि हमें सिंगापुर के दर्शन होते हैं।

उनका आठवां यात्रा वृत्त **कैप्टन कुक के देश में** है जो ऑस्ट्रेलिया की २०१७ की यात्रा को दर्शाता है। जिसमें लेखक ने ऑस्ट्रेलिया की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि विशेषताओं के साथ वहां का वर्णन किया है। ऑस्ट्रेलिया के चारों ओर समुद्र है, जनसंख्या बहुत कम और भौतिक सुविधाएं ढेर सारी उस पर ऑस्ट्रेलियन लोगों के प्रकृति प्रेम के कारण पुरे देश में सौंदर्य बिखरा पडा है। इस यात्रा के संबंध में वे कहते हैं–

स्वागत करता सिंधु है, लहरे भरें हिलोर।
नाच रहे हैं कुंज पर, युवती–युवक किशोर।।
दूर–दूर तक सिन्धु जल, विस्तृत भार–विभोर।
अटल खड़ी है श्रृंखला, नाच रहा मन भोर।।७

दिवाकर जी का नौंवा प्रवास वर्णन है **तीन कदम और** यह तीन देशों की सांस्कृतिक यात्रा है। जिसमें फ्रान्स, इटली और स्वीझरलैंड के मनोहारी दृश्यों के साथ वहॉ की शैक्षिक संस्थाओं का भी विवेचन किया गया है। लेखक ने इस यात्रा के माध्यम से यह बताने की कोशिश की है कि प्रतिकुल परिस्थिति में भी राष्ट्र किस तरह विकास कर सकते हैं। इस ग्रंथ को उन्होने तीन भागों में विभाजित किया है– १ वैभव के देश में (फ्रान्स की यात्रा), २ सुरंगों के देश में (स्विझरलैन्ड की यात्रा) और ३ ललित कला के देश में (इटली की यात्रा)।

अत: महेश दिवाकर के प्रवास वर्णनों से देश विदेश में हिंदी की स्थिति एवं गति का अंदाजा भलि–भॉति लग जाता है। उनके सभी यात्रा वृत उन देशों की सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक परिस्थिति का जायजा देते हैं। साथ रोचकता के साथ उन देशों के इतिहास एवं भूगोल को भी हमारे

Scanned with Ca

सामने रख देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१ गद्य की नई विधाओं का विकास — माजदा असद पृष्ठ क्र. ०९

२ सौंदर्यके देश में — डॉ. महेश दिवाकर पृष्ठ क्र. ६९

३ कर्मवीरों के देश में — डॉ. महेश दिवाकर अपनी बात से

४ दशानन के देश में — डॉ. महेश दिवाकर अपनी बात से

५ संभावना के देश में — डॉ. महेश दिवाकर पृष्ठ क्र. ५२, ५३

६ सदाचार के देश में — डॉ. महेश दिवाकर पृष्ठ क्र. ३७

७ कैप्टन कुक के देश में — डॉ. महेश दिवाकर पृष्ठ क्र. २०

❑❑❑

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602

38

Arts Science & Commerce College Naldurg

बुन्देलखण्ड के साहित्यकारों का योगदान

डॉ. अमित शुक्ल
प्राध्यापक, हिन्दी,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

****

सारांश

बुन्देली का अधिकांश साहित्य यहाँ के संकलित तथा असंकलित दोनों परम्पराओं में पाया जाता है। लोकगाथाएँ, लोकगीत, लोकोक्तियाँ तथा पहेलियाँ बुन्देलखण्ड की वाचिक परम्परा के असाधारण साहित्यिक भंडार हैं। बुन्देलखण्ड का साहित्य वीरगाथा कला, भक्ति और रीतिकालीन कवियों की रचनाओं से परिपूर्ण रहा, जो राजदरबारों से प्रवाहित हुआ। अनेक कवियों ने आदर्शवादी श्रृंगार रस से परिपूर्ण ग्रन्थों की रचना की, जिसमें राजा और उनके दरबारी विलास वैभव सरिता रस में अपना मनोरंजन रूपी मज्जन किया करते थे। बुंदेली में पर्याप्त साहित्य है परन्तु शासन की उपेक्षा और बुंदेलखंड वासियों की मानसिक शिथिलता के कारण यह वांछित रूप से विकसित नहीं हो पाई। फिर भी विद्वानों ने बुंदेली में जो साहित्य लिखा वह कम महत्व का नहीं है, पर यह तो निर्विवाद रूप से स्पष्ट है कि बुंदेली का जन्म तो नवमी—दसवीं शताब्दी में ही हो चुका था।

मुख्य शब्द—बुन्देली, वाचिक परम्परा, साहित्य, मातृभाषा, विभाषा, उपबोलियाँ, राजदरबरों, विस्तृत भू—भाग

प्रस्तावना—बुन्देलखण्ड के मूल निवासियों की मातृभाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी है। प्राचीन समय में बुन्देलखण्ड को चेदि जनपद के नाम से जाना जाता है। मध्यभारत के इतिहास में जुझौति, जैजाकभुक्ति, दशार्ण, चंदेरी तथा गुड़ानों आदि इसी जनपद के नाम समय—समय

Scanned with Ca